मझधार में धार

पंकज चतुर्वेदी

पंकज चतुर्वेदी

दीवारों पर लिखे नारे–'जल है तो कल है' की वास्तविकता देखना हो तो देश के किसी भी हिस्से की किसी भी नदी के किनारे चले जाएं, कल-कल बहने वाली नदी, कूड़ा ढ़ोने का मार्ग बन कर रह गई है। सरकारी बजट से नदियों को निर्मल बनाने का खर्चा, समाज के जल-धाराओं को अविरल बनाने के संकल्प और धर्म द्वारा नदियों को की गई व्याख्या की वास्तविकता से रूबरू करवाती यह पुस्तक कई साल देश के विभिन्न हिस्सों में घूमने के बाद उभरी दर्दनाक तस्वीर का रेखा-चित्र है।

पंकज चतुर्वेदी, (एम.एससी, गणित और एम.जे.एम.सी.) मूल रूप से पत्रकार हैं, सारे देश में घूमते हैं और पानी, तालाब जैसे विषयों पर देशभर के अखबारों, पत्रिकाओं में बीस हजार से ज्यादा आलेख लिख चुके हैं। बच्चों के लिए कई पुस्तकें लिखी और अनूदित की हैं।

प्रकाशित पुस्तकें–'क्या मुसलमान ऐसे होते हैं?', 'दफन होते दरिया', धरती को बचाओ, डूबते उतरते शहर, 'जल मांगता जीवन', 'समय के सवाल', 'लोक, आस्था और पर्यावरण', समाज के सवाल, लहरों में जहर।

कुछ उल्लेखनीय सम्मान : म.प्र. आंचलिक पत्रकार संघ द्वारा वर्ष 1991 का माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता पुरस्कार, षष्ठम विश्व पर्यावरण महासम्मेलन, 1997 में 'राष्ट्रीय पर्यावरण सेवा सम्मान', चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में वर्ष 1999 के लिए संवर्ग (9-12 आयुवर्ग) का द्वितीय पुरस्कार, साक्षरता निकेतन, राज्य संसाधन केंद्र द्वारा आयोजित अखिल भारतीय नवसाक्षर लेखन प्रतियोगिता वर्ष 2001-02 में दो पांडुलिपियाँ पुरस्कृत, एनसीईआरटी के लिए तैयार ऑडियो कार्यक्रम को श्रेष्ठ पुरस्कार, वर्ष-2008, कार्यक्रम-बचेन्द्रीपाल, बाल साहित्य के लिए डा. हरिकृष्ण देवसरे पुरस्कार (2016), महावीर प्रसाद द्विवेदी पर्यावरण सम्मान (2017), सूर सम्मान (बाल साहित्य, उ.प्र. सरकार), मेदीनी पुरस्कार (पर्यावरण तथा वन मंत्रालय, भारत सरकार) आदि। आकाशवाणी, दूरदर्शन व कई टी वी चैनलों पर कई कार्यक्रमों में विशेषज्ञ के रूप में शामिल। एस.आर.सी, जामिया मिलिया इस्लामिया और एन.सी.ई.आर.टी. के लिए कई ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों का लेखन।

संप्रति : स्वतंत्र लेखन, **संपर्क :** pc7001010@gmail.co

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, इंडिया

ISBN 978-81-969712-4-3

₹ 230/-

Cover Design by : The Creativeart

मझधार में धार

मझधार में धार

पंकज चतुर्वेदी

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत

ISBN 978-81-969712-4-3

पहला संस्करण : 2024 (*शक* 1945)

© लेखकाधीन

Majdhar Mein Dhar (*Hindi Original*)

₹ 230.00

प्रवासी प्रेम पब्लिशिंग, भारत

3/186 राजेंद्र नगर, सेक्टर-2, साहिबाबाद,
गाजियाबाद 201005 द्वारा प्रकाशित।

टाईपसेटिंग - **नूतन ग्राफिक्स,** साहिबाबाद, मो. 9891459346

www.pppublishingindia.press

अनुक्रम

भूमिका *नौ*

कूड़ा ढोने का मार्ग बन गई हैं नदियाँ

1. **नदियों का काल बनता रेत खनन** 1
2. **कराह रही है गंगा** 9

गर्भ ठहरने पर खुशी से ज्यादा चिंता
कैंसर वाले गाँव के रूप में कुख्यात
कागजों पर एनजीसी
गंगा से गायब होतीं देशी मछलियाँ
गंगा के प्रति बेपरवाही से डूबा था पटना

3. **यमुना : वादों की नहीं, इरादों की दरकार है** 29

दिल्ली में हताश होती 'यमुना'
राजधानी को जहर बाँट रहा है यमुना जल
सखी-सहेली भी बिगाड़ती हैं यमुना की सेहत
हिंडन, जो कभी नदी थी
जब नदियाँ बैरन बनीं
हिंडन-यमुना : एक उपेक्षित, नीरस संगम
काली नदी की काली दास्ताँ
नून नदी कैसे नूर नाला बनी

4. **यूँ बेनूर हो गई शाम-ए-अवध** 58

रिवर फ्रंट से हुआ नुकसान
एनजीटी ने लगाया जुर्माना
सहायक नदियों के सूखने से उपजा पर्यावरणीय संकट
पानी का दोहन ज्यादा, रिचार्ज कम
एक बेहतर योजना बनाने की जरूरत

गोमती की सहायक नदियाँ
मौसमी नदी बन गई गोमती
60 प्रतिशत तक घटा नदी का प्रवाह
वैज्ञानिक शोध में भी खतरनाक मिली गोमती
सीएजी ने भी कहा गोमती गंदी है
5. सोन नद में बेखौफ घुलता जहर 71
6. आठ बहनों वाले राज्यों में मरती नदियाँ 81
भू-क्षरण और प्रदूषण से बिफरती ब्रह्मपुत्र
अपने ही किनारों को हड़पता ब्रह्मपुत्र नद
नीली मौत मरतीं मेघालय की नदियाँ
डिगारू के सामने अस्तित्व का खतरा
सबसे स्वच्छ-अविरल उमनगोत के लिए लड़ते आदिवासी
मणिपुर : पॉलिथीन कचरे से नाबदान बनी नांबुल नदी
अरुणाचल प्रदेश : सियांग को खतरा है चीन से
7. सिंहस्थ के तट पर लुप्त क्षिप्रा 103
नालों व कान्ह का मिल रहा गंदा पानी
रिपोर्ट में खुलासा : क्षिप्रा का पानी सबसे बुरी स्थिति में
क्षिप्रा के अस्तित्व पर संकट के मूल कारण
क्षिप्रा की दुश्मन खान नदी
एक बार फिर नर्मदा-क्षिप्रा का मिलन
8. दक्षिण भारत : नदियों की गोदी में कूड़े का ढेर 115
किसे परवाह है कावेरी की लहर में जहर की
नदियों का शत्रु बना तमिलनाडु का औद्योगीकरण
छोटी नदियाँ, बड़ा संकट
कारखानों की गंदगी से हताश है तुंगभद्रा
गोदावरी : अमृत बूँदों में जहर का प्रवाह
अंतिम साँसें लेती पेरियार
दूषित जल से 'कृष्ण' हुई कृष्णा
9. नदियों को पीकर प्यासा झारखंड 133
घट गई है नदियों की चौड़ाई
ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी साफ है नदी
झारखंड क्षेत्र में लुप्त होती जलधाराएँ
नदियाँ हड़पता राज्य
झारखंड की नदियाँ नहीं रहीं सदानीरा

10. **नदियों में घटते जल से खतरे में है भीतरकनिका का पर्यावरणीय तंत्र** 143
11. **नदियों को डुबाने से डूबते हैं महानगर** 149
मायानगरी की लुप्त हुई चार नदियाँ
जलनिधियों में कूड़ा भरने से डूब गया चेन्नई
नदी-नाले गप्प करने से डूबता-उतराता गुरुग्राम
12. **मरूगंगा पर मौत का साया** 159

भूमिका
कूड़ा ढोने का मार्ग बन गई हैं नदियाँ

उन्नीसवीं सदी तक बिहार (आज के झारखंड को मिला कर) में कोई छह हजार नदियाँ हिमालय से उतर कर आती थीं। आज इनमें से महज 400 से 600 का ही अस्तित्व बचा है। मधुबनी, सुपौल में बहने वाली 'तिलयुगा' नदी कभी 'कोसी' से भी विशाल हुआ करती थी, लेकिन आज उसकी जल धारा सिमट कर कोसी की सहायक नदी के रूप में रह गई है। सीतामढ़ी की 'लखनदेई' नदी को तो सरकारी इमारतें ही चाट गईं। नदियों के इस तरह रूठने और उससे बाढ़ तथा सुखाड़ के दर्द साथ-साथ चलने की कहानी देश के हर जिले और कस्बे की है। लोग पानी के लिए पाताल का सीना चीर रहे हैं और निराशा हाथ लगती है, उन्हें यह समझने में दिक्कत हो रही है कि धरती की कोख में जल भंडार तभी लबा-लब रहता है, जब पास बहने वाली नदियाँ हँसती-खेलती हों।

लखनऊ में शाम-ए-अवध की शान 'गोमती' नदी हो या फिर गाजियाबाद की अंतिम शैया पर लेटी 'हिंडन'-हर एक जगह एक ही लुभावना सपना होता है-रिवर फ्रंट बनाएँगे और लंदन की 'टेम्स' नदी की तरह सँवारेंगे। इससे पहले कॉमनवेल्थ खेलों के पहले दिल्ली में यमुना तट को भी टेम्स की तरह सुंदर बनाने का सपना दिया गया था, उल्टे नदी तो और मैली व दुबली हो गई। हाँ, जहाँ नदी का पानी बहना था, वहाँ कॉमनवेल्थ खेल गाँव, अक्षरधाम मंदिर और ऐसे ही कई निर्माण कर दिए गए। नदी अपने आप में पवित्र और सुंदर होती है, उसके जल से कोई भी व्यक्ति या वस्तु को पावन बनाया जा सकता है। उसको सुंदर बनाने की बात करना बेमानी है। असल में ऐसी योजना बनाने वालों की निगाह रिवर फ्रंट के नाम पर नदी की धारा को सँकरा कर उभरी जमीन के व्यावसायिक इस्तेमाल की होती है। साबरमती रिवर फ्रंट का उदाहरण सामने है। उसे सुंदर दिखाने के लिए नर्मदा से पानी लाया जाता है।